موضوع الخطبة : فضل التبكير إلى الصلاة

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/ حفظه الله

لغة الترجمة : الهندية

المترجم :فيض الرحمن تيمى (@Ghiras_4T)

शीर्षक:

नमाज़ के लिए जल्दी करने का महत्तव

إِنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إله إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ

(يَا أَيُّهَ الَّذِينَ آمَنُواْ اتَّقُواْ اللّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلاَ تَمُوتُنَّ إِلاَّ وَأَنتُم مُّسْلِمُون).

(يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُواْ رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالاً كَثِيراً وَنِسَاء وَاتَّقُواْ اللّهَ الَّذِي تَسَاءلُونَ بِهِ وَالأَرْحَامَ إِنَّ اللّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبا).

(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلاً سَدِيداً * يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَمَن يُطِعْ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزاً عَظِيما).

प्रशंसाओं के पश्चात!

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है एवं सर्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है।दुष्टतम चीज़ धर्म में अविष्कारित बिदअ़त(नवाचार)है और प्रत्येक बिदअ़त गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।

ए मुसलमानो!अल्लाह तआ़ला से डरो और उसका भय रखो,उसकी आज्ञाकारिता करो और उसके अवज्ञा से बचो,और यह ध्यान में बैठालो कि नमाज़ तुम्हारे महत्वपूर्ण कार्यों में से एक है,अल्लाह ने अन्य प्रार्थनाओं के तुलना में इसे अनेक सारी विशेषताओं से विशिष्ट बनाया है,उन्हीं विशेषताओं में से यह भी है कि अल्लाह ने आकाश में इसे फरज़ किया,वह कार्य में पांच है किंतु तराजू (पुण्य) में पचास नमाज़ों के बराबर है,नमाज़ पापों को मिटाती है,नमाज़ के लिए मस्जिदें जाना और वहां से निकलना पूजा है,इसी प्रकार इसकी महान विशेषताओं में से यह भी है कि इसके लिए पवित्रता प्राप्त करना अनिवार्य है।

- ए मोमिनो!नमाज़ के इसी महत्व एवं सार्थकता को देखते हुए अल्लाह ने इसके लिए जलदी करने को मशरू कर दिया,इस पर बड़ा पुण्य रखा,अतः ह़ज़रत अबू होरैरा रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि रसूल सल्ललाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः"पुरूषों की सर्वश्रेष्ठ पंक्ति प्रथम एवं दुष्टतम अंतिम है,जबकि महिलाओं की सर्वश्रेष्ठ पंक्ति अंतिम एवं दुष्टतम प्रथम पंक्ति है" ।[1]

- अबू होरैरा रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि रसूल सल्ललाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया किः"यदि तुम लोग (अथवा वे लोग) प्रथम पंक्ति के महत्व जानते तो उसमें शामिल होने के लिए भग्य क्रीड़ा डालते" । [2]
- अबू होरैरा रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि रसूल सल्ललाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया किःयदि लोगों को मालूम होता कि अज़ान कहने और नमाज़ प्रथम पंक्ति में पढ़ने से कितना पुण्य मिलता है।फिर उनके लिए भाग्य क्रीड़ा डालने के अतिरिक्त कोई और उपाय न बचता,तो वे भाग्य क्रीड़ा ही डालते और यदि लोगों को मालूम हो जाता कि नमाज़ के लिए जलदी आने में कितना पुण्य मिलता है तो इसके लिए दूसरे से आगे बढ़ने का प्रयास करते।और यदि लोगों को मालूम हो जाता कि एशा और प्रभात की नमाज़ का पुण्य कितना मिलता है,तो अवश्य चूत्तड़ों के बल घिसटते हुए इनके लिए आते" ।[3]

---

[1] मुस्लिमः440

[2] मुस्लिमः439

[3] बोखारीः615,मुस्लिमः437

रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथ (ما في النداء) का अर्थ यह है कि अज़ान देने वाले का कया पुण्य है।आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन (يستهِموا)का अर्थ है भाग्य क्रीड़ा डालना, التهجير का अर्थ है जलदी करना,और العتمة एशा की नमाज़ का कहा जाता है।

- बरा बिन आज़िब से वर्णित है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते थे:" अल्लाह तआ़ला प्रथम पंक्तियों पर अपनी कृपा भेजता है और उसके देवदूत उनके लिए प्रार्थनाएं करते हैं" ।[4]

रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन:"देवदूत उनके लिए प्रार्थनाएं करते हैं" का सार यह है कि देवदूत प्रथम पंक्ति वालों के लिए कृपा एवं क्षमा की प्रार्थना करते हैं।क्योंकि अ़रबी में الصلاة का एक अर्थ प्रार्थना भी होता है।

- इरबाज़ बिन सारिया रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम प्रथम पंक्ति के लिए तीन बार और द्वितीय पंक्ति के लिए एक बार माफी की दुआ करते थे।[5]
- अबू सई़द खुदरी रजीअल्लाहु अंहु का बयान है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सह़ाबा रजीअल्लाहु अंहुम को पिछली पंक्ति में देख कर फरमाया:"मेरे निकट आओ और प्रथम पंक्ति पूरी करो,फिर द्वितीय पंक्ति वाले तुम्हारा अनुगमन करें और जो लोग पीछे रहेंगे तो अल्लाह तआ़ला अपने कृपा में भी उनको पीछे रखेगा" ।[6] अर्थात अल्लाह उन्हें अति कृपा व आशीर्वाद एवं उच्च स्थान व प्रतिष्ठा से दूर करदेगा।
- ह़ज़रत आयशा रज़ीअल्लाहु अंहा कहती हैं कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:"जो लोग प्रथम पंक्ति से पीछे रहेंगे तो अल्लाह तआ़ला अपने कृपा से उनको पीछे रखेगा" ।[7]

---

[4] इसे अबूदाउूद:664 ने वर्णित किया है और अल्बानी रहीमहुल्लाह ने इसे सहीह़ कहा है।
[5] इसे निसाई:816 और इब्ने माजा ने रिवायत किया है और अल्बानी रहीमहुल्लाहु ने इसे सही कहा है।
[6] मुस्लिम:438
[7] इसे अबूदाउूद ने रिवायत किया है और अल्बानी ने इसे सही कहा है।
नोट:ह़दीस का अंतिम भाग इस प्रकार है(حتى يؤخرهم الله في النار)किंतु शैख अल्बानी ने इस वृद्धि को ज़ईफ कहा है,इस लिए में ने उल्लेख नहीं किया,देखें:(السلسلة الضعيفة) (6442)

अल्लाह तआ़ला हमें और को कुरान की बरकतें प्रदान करे,मुझे और आप को इसकी आयतों और हि़कमत(निती) पर आधारित प्रामर्शों से लाभ पहुचाए,में अल्लाह से अपने लिए और आप सबके लिए क्षमा प्राप्त करता हूं,आप भी उससे क्षमा प्राप्त करें,निसंदेह वह अति क्षमा करने वाला अति कृपा करने वाला है।

द्वितीय उपदेशः

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده، أما بعد:

प्रशंसाओं के पश्चात!

आप जानलें-अल्लाह आप पर कृपा करे-कि इस्लाम में नमाज़ का इतना महत्व है जो किसी दूसरी प्रार्थना का नहीं,नमाज़ धर्म का एसा स्थंभ है जिसके बिना धर्म की इमारत खरी नहीं हो सकती,अतःह़ज़रत मोआ़ज़ रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है वह कहते हैं कि रसूल सल्ललाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः"क्या में तुम्हें धर्म का नींव,इसका स्तंभ और इसका शिखर न बता दूं?"मेंने कहाःक्यों नहीं?अल्लाह के रसूल (अवश्य बताए) आपने फरमायाः"धर्म का मूल (आधार) इस्लाम है और इसका स्तंभ नमाज़ है और इसका शिखर जिहाद है" ।[8]

- बंदा और उसके रब के मध्य वार्तालाप व कानाफूसी के लिए नमाज़ एक माध्यम है,क्योंकि नमाज़ के अंदर रब की प्रशंसा एवं चरित्रचित्रण की जाती है,नमाज़ कुरान का सस्वर पाठ,तसबीह़ व प्रशंसा,तकबीर एवं शारीरिक अधीनता व विनम्रता पर आधारित होती है,जैसे सजदा करना,रुकू करना, अधीनता व विनम्रता और आज्ञानुकूलता के साथ महान एवं शक्तिशाली पालनहार के समक्ष नज़र झूका कर खड़ा होना।

शैख सादी रहीमहुल्लाह आयत﴿إن الصلاة تنهى عن الفحشاء والمنكر ولذكر الله أكبر﴾की व्याख्या में लिखते हैंःतथा नमाज़ का एक **उद्देश्य** इससे भी महान है,अर्थात दिल,जीभ और शरीर से अल्लाह का ज़िक्र करना,क्योंकि अल्लाह ने अपने बंदों को अपने पूजा के लिए पैदा किया है,बंदे की ओर से की जाने वाली प्रार्थनाओं में से सर्वश्रेष्ठ प्रार्थना नमाज़ है,नमाज़ में मनुष्य के शारीरिक अंग व भागयों की आज्ञाकारिता का दृश्य होता है,यह

[8] इसे तिरमिज़ी ने रिवायत किया और कहा कि यह ह़दीस ह़सन सह़ी है।

परिस्थिति किसी अन्य प्रार्थना में नहीं पाई जाती,इसी लिए अल्लाह ने फरमाया ﴿ولذكر الله أكبر﴾ (अल्लाह का जिक्र सबसे बड़ी चीज़ है।)समाप्त

- आप यह जानलें...अल्लाह आप पर कृपा कर...कि अल्लाह तआ़ला ने आपको यह आदेश दिया है कि जिस का प्रारंभ अपनी जात से किया,फिर अल्लाह की पवित्रता बयान करने वाले देवदूतों को इस का आदेश दिया और उसके पश्चात मनुष्य एवं जिनों के समस्त मुसलमानों को आदेश देते हुए फरमायाः

(إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا)

अर्थातःअल्लाह तआ़ला और उसके देवदूत उस नबी पर रह़मत भेजते हैं,ए ईमान वालो!तुम भी उन पर दरूद भेजो और अधिक सलाम भी भेजते रहा करो।

- हे अल्लाह! तू अपने दास एवं संदेशवाहक मोह़म्माद पर रह़मत एवं शांति भेज,तू उनके उत्तराधिकारियों,अनुयाईयों और क़ेयामत तक नेकनीयती के साथ उनका अनुगमन करने वालों से प्रसन्न होजा।
- हे अल्लाह! इसलाम और मुसलमानों को सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान कर,बहूदेववाद एवं बहूदेववादियों को अपमानित कर,तू अपने और इस्लाम धर्म के शत्रुओं को नष्ट करदे,और अपने एकेश्वरवादी बंदों की सहायता फरमा।
- हे अल्लाह तू हमें हमारे देशों में शांति प्रदान कर,हमारे इमामों और हमारे हाकिमों को सुधार दे,उन्हें हिदायत का निदेशक और हिदायत पर चलने वाला बना।
- हे अल्लाह!समस्त मुस्लिम शासकों को अपनी पुस्तक को लागू करने,अपने धर्म को उच्च करने की तौफीक प्रदान कर और उन्हें अपने प्रजाओं के प्रति कृपा का कारण बना दे।
- हे अल्लाह!हम तुझसे दुनिया एवं आखिरत की समस्त भलाई की दूआ मांगते हैं,जो हमको मालूम है और जा हमको मालूम नहीं,और हम तेरी शरण चाहते हैं दुनिया एवं आखिरत की समस्त पापों से जा हमको मालूम है और जा हमको मालूम नहीं।

- हे अल्लाह! हम तुझसे स्वर्ग के स्वाली हैं और उस कथन एवं कार्य के भी जो स्वर्ग से निकट करदे,अैर तेरी शरण चाहते हैं नरक से और उस कथन एवं कार्य से जो नरक से निकट करदे।
- हे अल्लाह! हमारे रोगियों को स्वास्थ्य प्रदान कर,हमारे मृत्युों पर कृपा कर और आज़माइशों से जूझ रहे हमारे भाइयों से आज़माइश को दूर करद।
- हे अल्लाह!हमारे धर्म को सूधार दे जो हमारे मामलों का रक्षक है,हमारी दुनिया को सूधार दे जहां हमारा जीवन गुज़रता है,हमारे आखिरत को दुरुस्त करदे,जो हमारा अंतिम ठेकाना है,प्रत्येक पुण्य के कार्य में हमारे लिए जीवन को बढ़ादे,और मोत को हमारे लिए शांति का वस्तू बना।
- हे हमारे रब!हमें दुनिया में पुण्य दे और आखिरत में भलाई प्रदान कर,और नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर।
- ए अल्लाह के बंदो!निसंदेह अल्लाह तआ़ला न्याय का,कलयाण का एवं परिजनों के साथ सुंदर व्यवहार का आदेश देता है और **अश्लीलता** के कार्यों,अशिष्ट गतिविधियों और क्रूरता व निर्दयता से रोकता है वह स्वयं तुम्हें प्रामर्श कर रहा है कि प्रामर्श प्राप्त करो।इस लिए तुम अल्लाह शक्तिशाली का जिक्र करो वह तुम्हारा जिक्र करेगा,उसके आशीर्वादों पर उसका आभारी रहो वह तुम्हें और अधिक आशीर्वाद प्रदान करेगा,अल्लाह का जिक्र बहुत बड़ी चीज है,तुम जो कुछ भी करते हो वह उससे अवज्ञत है।

लेखकः

मजिद बिन सुलेमान अलरसी

१६ शौवाल **१४४१** ह़िजरी

जूबैल, सउ़दी अ़रब

००९६६५०५९०६७६१

अनुवादः

फैजुर रह़मान ह़िफजुर रह़मान तैमी

binhifzurrahman@gmail.com